साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 2
February 2016

रोटी का टुकड़ा

शशिकांत निशांत शर्मा 'साहिल'

हर रोज की तरह
सुबह-सुबह
मै छत पर टहल रहा था
तभी मैने देखा
थोड़ी ही दूर
एक मकान में एक महिला
झाड़ू पोछा लगा रही थी
खुले दरवाजे और खिड़कियों से
सब साफ-साफ दिख रहा था
ज्यादा उम्र की नही थी
पर हालात ने उसे
अधेड़ उम्र की दिखने पर कर दिया था मजबूर
काम पूरा होते ही
आई उसकी मालकिन
और पारिच्रमिक के रूप मे
थमा दी हाथ में
रोटी के दो चार टुकड़ें
उस टुकड़े को वह
ढक ली अपनी आँचल में
और चल दी अपने घर
कुछ ही दूर था उसका घर
मैंने देखा
उसके दो छोटे-छोटे बच्चें
देखते ही माँ को उछले
मै देखता रह गया
उस घर का दुखड़ा
उस माँ का मुखड़ा
और वह रोटी का टुकड़ा